

डॉ. ट्रेम्पर लॉन्गमैन, ईश्वर एक योद्धा है, सत्र 2, युद्ध कैसे आयोजित किया जाता है: पहले, दौरान और एक लड़ाई के बाद

© 2024 ट्रेम्पर लॉन्गमैन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ट्रेम्पर लॉन्गमैन हैं और ईश्वर एक योद्धा है विषय पर उनकी शिक्षा, सत्र 2, युद्ध से पहले, युद्ध के दौरान और बाद में युद्ध कैसे किया जाता है।

इसलिए, वास्तव में चरण एक में आने से पहले, जैसा कि मैंने कहा, मैं सबसे पहले, इस बारे में बात करना चाहूंगा कि पुराने नियम में युद्ध कैसे आयोजित किया जाता है, और मैं यहां जो कर रहा हूं वह कुछ प्रकार से सामग्री का संश्लेषण करना है पुराने नियम के स्रोत। सबसे पहले, दो कानून हैं जो व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, व्यवस्थाविवरण 7 और व्यवस्थाविवरण 20 में युद्ध छेड़ने से जुड़े हैं।

तो, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक एक वाचा का नवीनीकरण है, जिसे मूसा नेबो पर्वत पर चढ़ने और मरने से ठीक पहले इज़राइल का नेतृत्व कर रहा है, और यहोशू के नेतृत्व में इज़राइलियों की दूसरी पीढ़ी वादा किए गए देश में जाती है। इसलिए, यह उनके लिए ईश्वर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रतिबद्ध होने का एक अवसर है। और इसलिए, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, कई लोग कहते हैं, और मैं सहमत हूं, इसमें प्राचीन निकट पूर्वी संधि के कई घटक हैं, जो मूल रूप से हैं, याद रखें कि हमने भगवान के रूपकों के बारे में बात की थी, भगवान एक राजा है, वह एक संप्रभु राजा है, इज़राइल उसके जागीरदार लोग हैं, और इसलिए हम वाचा संधि के सभी अलग-अलग हिस्सों में नहीं जाएंगे, लेकिन विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण जैसी पुस्तक में, कानून वास्तव में एक महत्वपूर्ण बिंदु निभाता है।

और निस्संदेह, व्यवस्थाविवरण 5, दस आज्ञाओं के साथ शुरू होता है, और उसके बाद आने वाला मामला कानून, और यह अन्य मामले में भी सच है, निर्गमन की पुस्तक की तरह, कानून वास्तव में दस आज्ञाओं के सिद्धांतों को ले रहा है और उन्हें विशिष्ट मामलों, स्थितियों पर लागू करना, जैसे कि वकील मुझे बताते हैं कि हम केस कानून या वैधानिक कानून क्या कहते हैं और हमारे पास व्यवस्थाविवरण 7 और 20 में जो है वह एक ऐसा अनुप्रयोग है जिसमें आपको युद्ध के संदर्भ में हत्या नहीं करनी चाहिए। अब यह वास्तव में है, मैंने सिर्फ आज्ञा का गलत अनुवाद किया है और एक बुनियादी त्रुटि की है, इसका वास्तव में अनुवाद इस प्रकार किया जाना चाहिए, आपको हत्या नहीं करनी चाहिए। यह हत्या के विरुद्ध कोई सामान्य निषेध नहीं है, जो इस बात पर विचार करते हुए अजीब होगा कि ऐसे उदाहरण हैं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक स्वयं कहती है कि हत्या करना वैध है और युद्ध के ये कानून मूल रूप से यही कर रहे हैं।

तो, मैं उन्हें पढ़ने जा रहा हूं, वे थोड़े लंबे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इन्हें ध्यान में रखना अच्छा है और उम्मीद है, आपके पास एक बाइबिल है और आप इसे निकाल सकते हैं और मेरे साथ चल सकते हैं। मैं एनआईवी में पढ़कर प्रसन्न हूं और यह व्यवस्थाविवरण 7, 1 और निम्नलिखित में

कहता है, जब तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में पहुंचाएगा जिस पर तुम अधिकार करने के लिए प्रवेश कर रहे हो और तुम्हारे सामने कई राष्ट्रों, हितियों, गिरगिशियों, एमोरियों को बाहर निकाल देगा।, कनानी, परिज्जी, हित्ती, और यबूसी, वे सात जातियां जो तुम से बड़ी और सामर्थी हैं, और जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको तुम्हारे वश में कर दे, और तुम उन्हें हरा दो, तब तुम्हें उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर देना चाहिए। हम इस क्रिया और इसकी संज्ञा हराम पर वापस आएंगे, जिसका अनुवाद यहां किया जा रहा है, आपको उन्हें पूरी तरह से नष्ट करना होगा।

उनके साथ कोई सन्धि न करो और उन पर कोई दया न करो। उनके साथ ब्याह न करना, न अपनी बेटियाँ उनके बेटों को देना, और न उनकी बेटियाँ अपने बेटों के लिए लेना, क्योंकि वे तुम्हारे बच्चों को मेरे पीछे चलने से रोककर पराये देवताओं की उपासना करा देंगे, और यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा, और शीघ्र ही तुम्हें नष्ट कर देगा। . तुम्हें उनके साथ यह करना है, उनकी वेदियों को तोड़ देना, उनके पवित्र पत्थरों को तोड़ देना, उनके अशेरा के तालाबों को काट देना, और उनकी मूर्तियों को आग में जला देना।

क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र लोग हो। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें पृथ्वी भर के सब लोगों में से अपनी प्रजा, और अपनी निज संपत्ति होने के लिये चुन लिया है। प्रभु ने आप पर अपना स्नेह नहीं डाला और आपको इसलिए नहीं चुना क्योंकि आप अन्य लोगों की तुलना में अधिक थे, क्योंकि आप सभी लोगों में सबसे कम थे।

परन्तु यह इसलिये हुआ कि यहोवा तुम से प्रेम रखता था, और उस शपथ को पूरी करता था जो उस ने तुम्हारे पुरखाओं से खाई थी, कि वह तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के देश से, अर्थात् मिस्र के राजा फिरौन के वश से छुड़ा ले आया। इसलिये जान लो कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है, और जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन हजार पीढ़ियों तक वह अपनी प्रेम की वाचा का पालन करता है। परन्तु जो उस से बैर रखते हैं, वह उनको नाश करके बदला देगा।

वह उन लोगों से बदला लेने में देर नहीं करेगा जो उससे नफरत करते हैं। इसलिये जो आज्ञा, नियम, और व्यवस्था मैं आज तुम्हें देता हूँ, उन का पालन करने में चौकसी करना। मैं श्लोक 16 पर जा रहा हूँ।

तुम्हें उन सभी लोगों को नष्ट करना होगा जिन्हें यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें सौंपता है। उन पर दया की दृष्टि न करना, और उनके देवताओं की उपासना न करना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये फन्दा ठहरेगा। आप स्वयं से कह सकते हैं, ये राष्ट्र हमसे अधिक शक्तिशाली हैं।

हम उन्हें कैसे बाहर निकाल सकते हैं? लेकिन उनसे डरो मत. अच्छी तरह याद रखो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने फिरौन और सारे मिस्र से क्या किया। तू ने अपनी आंखों से बड़े बड़े परीक्षण, चिन्ह, और चमत्कार, और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा को देखा, जिस से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे निकाल लाया।

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों के साथ वैसा ही करेगा जिन से तुम अब डरते हो। इसके अलावा, तेरा परमेश्वर यहोवा उनके बीच बर्भ भेजेगा, यहां तक कि जो बचे हुए लोग तुझ से छिप जायेंगे वे भी नाश हो जायेंगे। उनसे मत डरो, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे बीच में है वह महान और भययोग्य परमेश्वर है।

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तुम्हारे साम्हने से धीरे धीरे निकाल देगा। आपको उन सभी को एक साथ खत्म करने की अनुमति नहीं दी जाएगी अन्यथा जंगली जानवर आपके आसपास बढ़ जायेंगे। परन्तु तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे हाथ सौंप देगा, और उन्हें बड़े भ्रम में डाल देगा, कि तुम नष्ट हो जाओ।

वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में कर देगा, और तू उनका नामोनिशान धरती से मिटा डालेगा। कोई भी तुम्हारे विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकेगा। तुम उनको, उनके परमेश्वर की प्रतिमाओं को, नष्ट कर दोगे।

तुम्हें आग में जलना है। उन पर सोना चाँदी न ढांकना, और न उसे अपने पास रखना, नहीं तो तुम उसके द्वारा फंसोगे, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को घृणित है। कोई घृणित वस्तु अपने घर में न लाना, नहीं तो तू भी उसके समान विनाश के लिये फेंक दिया जाएगा।

यह हमारा शब्द हेरेम फिर से है, जिसे घृणित और पूरी तरह से घृणित माना जाता है, क्योंकि यह विनाश के लिए अलग रखा गया है। और फिर व्यवस्थाविवरण 20 कहता है, जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और घोड़े, और रथ, और अपक्की सेना से बड़ी सेना देखे, तब उन से मत डरना, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझे मिस्र से निकाल ले आया वह तेरे संग रहेगा। जब तुम युद्ध में जाने वाले हो, तो पुजारी आगे आकर सेना को संबोधित करेगा।

वह कहेगा, हे इस्राएल सुन, आज तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने जा रहा है। निराश मत हो या डरो मत। उनसे मत डरो और न घबराओ, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ही तुम्हारे शत्रुओं से लड़ने को तुम्हारे साथ चलता है, और तुम्हें विजय दिलाता है।

अधिकारी सेना से पूछे, क्या किसी ने नया घर बनाकर अब तक उसमें रहना आरम्भ नहीं किया है? उसे घर जाने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर जाएगा और कोई और उसमें रहना शुरू कर देगा। क्या किसी ने अंगूर का बाग लगाया और उसका आनंद लेना शुरू नहीं किया? उसे घर जाने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर जाएगा और कोई और इसका आनंद उठाएगा। क्या किसी ने किसी स्त्री का बन्धक बन कर उस से विवाह न किया हो? उसे घर जाने दो, नहीं तो वह युद्ध में मर जाएगा और कोई और उससे विवाह कर लेगा।

तब अधिकारी यह भी कहे, क्या कोई डरा हुआ या निराश है? उसे घर जाने दो ताकि उसके साथी सैनिक भी निराश न हों। जब हाकिम सेना से बातें कर चुकें, तब वे उस पर सेनापति नियुक्त करें। जब आप किसी शहर पर हमला करने के लिए आगे बढ़ें, तो लोगों से शांति की पेशकश करें।

यदि वे मान जाएं और अपने फाटक खोल दें, तो उस में के सब लोग बेगारी के अधीन होंगे, और तुम्हारे लिये काम करेंगे। यदि वे मेल कराने से इन्कार करते हैं और तुम्हें युद्ध में उलझाते हैं, तो

उस नगर को घेर लो। जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में कर दे, तब उसके सब पुरूषोंको तलवार से मार डालना।

और स्त्रियों, बच्चों, पशुओं, और नगर की अन्य सब वस्तुओं को तुम अपने लिये लूट लेना; और जो लूट तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से तुम्हें देता है उसका उपयोग करना। इस प्रकार तुम्हें उन सभी नगरों के साथ व्यवहार करना है जो तुमसे कुछ दूरी पर हैं और आस-पास के राष्ट्रों से संबंधित नहीं हैं। परन्तु अन्यजातियों के नगरों में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे निज भाग करके देता है, वहां कोई प्राणी जीवित न छोड़ना।

हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों को सत्यानाश करो, जैसा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है। अन्यथा, वे तुम्हें उन सभी घृणित कामों का पालन करना सिखाएंगे जो वे अपने देवताओं की पूजा करते समय करते हैं, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करोगे। जब तुम किसी नगर को बहुत दिनों तक घेरे रहो, और उस पर अधिकार करने के लिये उस से लड़ो, तो उसके वृक्षोंपर कुल्हाड़ी चलाकर उनको नाश न करो, क्योंकि तुम उनका फल खा सकते हो।

उन्हें मत काटो. क्या पेड़ लोग हैं कि तुम्हें उनकी घेराबंदी करनी चाहिए? हालाँकि, आप उन पेड़ों को काट सकते हैं जिनके बारे में आप जानते हैं कि वे फलदार पेड़ नहीं हैं, और उनका उपयोग घेराबंदी के काम में तब तक कर सकते हैं जब तक कि आपके साथ युद्ध कर रहा शहर गिर न जाए। ठीक है, वे कुछ लंबे धर्मग्रंथ अंश थे, और फिर से मैं उन्हें श्लोक दर श्लोक उजागर नहीं करने जा रहा हूँ, लेकिन मैं उन्हें बाद में वास्तविक लड़ाइयों की ऐतिहासिक रिपोर्टिंग के साथ एक स्रोत के रूप में उपयोग करने जा रहा हूँ, जिसका मैं उल्लेख करूँगा जैसा कि मैं अब वर्णन करता हूँ कि युद्ध से पहले, उसके दौरान और बाद में क्या होता है।

और जैसा कि हम ऐसा करते हैं, मुझे लगता है कि हम प्राचीन इज़राइल में युद्ध की मौलिक धार्मिक प्रकृति को देखने जा रहे हैं। तो, आइए लड़ाई से पहले शुरुआत करें। युद्ध से पहले सबसे महत्वपूर्ण प्रारंभिक बात भगवान से पूछताछ करना है, या शायद बेहतर, अधिक व्यापक रूप से कहना है, किसी भी तरह से यह समझना कि यह भगवान की इच्छा है कि वे युद्ध में जाएं।

और हम दो अलग-अलग तरीकों के उदाहरण देख सकते हैं कि परमेश्वर इस मामले में अपनी इच्छा प्रकट करता है। और फिर, मुद्दा यह है कि मानव नेता युद्ध में जाने का निर्णय नहीं ले सकते। उन्हें अपना निर्देश, अपना मार्च आदेश, यूँ कहें तो, प्रभु से प्राप्त करना होगा।

तो हम ऐसा कहाँ होता हुआ देखते हैं? खैर, आइए जोशुआ अध्याय 5 के अंत की ओर मुड़ें, और यह जेरिको की लड़ाई की पूर्व संध्या पर है, जिस पर हम समय-समय पर वापस आएंगे। लेकिन हम देखते हैं, श्लोक 13 से शुरू करते हुए, हम पढ़ते हैं, अब जब यहोशू यरीहो के पास था, तो उसने ऊपर देखा और एक आदमी को हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके सामने खड़ा देखा। यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, क्या तू हमारी ओर से या हमारे शत्रुओं की ओर से है? अब, हिब्रू बस कहता है, लो।

एनआईवी इसका सही अनुवाद करता है, लेकिन मूल रूप से यह योद्धा व्यक्ति कह रहा है, नहीं। मैं हमारे लिए या हमारे दुश्मन के लिए नहीं हूँ। मैं सेनाओं में से एक में नहीं हूँ।

परन्तु वह कहता है, परन्तु यहोवा की सेना का प्रधान होकर मैं अब आया हूँ। तब यहोशू ने श्रद्धा से भूमि पर मुंह के बल गिरकर उस से पूछा, मेरे प्रभु के पास अपने दास के लिये क्या सन्देश है? यहोवा की सेना के प्रधान ने उत्तर दिया, अपनी जूतियां उतार दो, क्योंकि जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह पवित्र है। और यहोशू ने वैसा ही किया।

तो, चलिए इस सवाल से शुरू करते हैं कि यह आकृति कौन है? और मैं इस तथ्य से संकेत लेता हूँ कि यहोशू को सैंडल उतारने का आदेश दिया गया है क्योंकि जमीन पवित्र है, जो हमें, आप जानते हैं, जलती हुई झाड़ी और मूसा से जुड़ी भाषा की याद दिलाती है। यह स्पष्टतः भगवान स्वयं एक योद्धा के रूप में आ रहे हैं। और इस तरह, वह इज़राइल के पक्ष में नहीं है।

वह जेरिको के पक्ष में नहीं है, लेकिन वह ब्रह्मांड का सर्वोच्च भगवान है। और मेरा मानना है कि यहीं पर जोशुआ को शाब्दिक मार्चिंग आदेश मिलते हैं क्योंकि इसमें शहर के चारों ओर बहुत सारे मार्चिंग शामिल होंगे। और हम बाद में उस पर वापस आएंगे।

लेकिन फिर, यह एक उदाहरण है कि भगवान ने युद्ध से पहले यहोशू को अपनी इच्छा बताई थी। अब एक और दिलचस्प मामला 1 शमूएल 23 में पाया जाता है, और निस्संदेह, यह डेविड के समय के दौरान का है। यह डेविड के जीवन का वह समय है जब शमूएल ने उसे भावी राजा के रूप में नियुक्त किया है, लेकिन वह अभी तक राजा नहीं बना है।

शाऊल अब भी शासन कर रहा है, और शाऊल उसे मार डालने के लिये उसके पीछे पड़ा है। डेविड है, वह साथ है, उसके पास, मुझे लगता है, लगभग 600 लोगों की एक स्थायी सेना है। और उनके साथ महायाजक भी हैं, जो मैं जो पढ़ने जा रहा हूँ उसमें भूमिका निभाएंगे।

तो, 1 शमूएल 23 शुरू होता है जब दाऊद को बताया जाता है, देखो, पलिशती किला के खिलाफ लड़ रहे हैं, किला एक छोटा शहर है, मुझे लगता है, नेगेव की ओर, और खलिहानों को लूट रहे हैं। उस ने यहोवा से पूछा, क्या मैं जाकर इन पलिशतियों पर आक्रमण करूँ? ध्यान दें कि उसका पहला आवेग युद्ध में जाने का नहीं है, या यह कहने का है, मैं युद्ध करने नहीं जा रहा हूँ, बल्कि प्रभु से पूछने जा रहा हूँ। क्या मैं जाकर इन पलिशतियों पर आक्रमण करूँ? यहोवा ने उसे उत्तर दिया, जाकर पलिशतियों पर चढ़ाई कर, और किला को बचा।

परन्तु दाऊद के जनों ने उस से कहा, यहां यहूदा में हम लोग डरते हैं, यदि हम पलिशती सेनाओं के साम्हने किला को जाएं, तो क्यों न डरें? दाऊद ने फिर यहोवा से पूछा, और यहोवा ने उसको उत्तर दिया, किला को जा; क्योंकि मैं पलिशतियों को तेरे हाथ में कर दूंगा। इसलिये दाऊद और उसके जनों ने किला को जाकर पलिशतियों से युद्ध किया, और उनके पशुओं को छीन लिया। उसने पलिशतियों को भारी नुकसान पहुँचाया और किला के लोगों को बचाया।

अहीमेलेक का पुत्र एब्द्यातार, किला में दाऊद के पास भागते समय एपोद को अपने साथ ले आया था। ठीक है, तो आप इसे समझ गए, एनआईवी जो दर्शाता है वह श्लोक 6 में एक मूल

टिप्पणी है, और मूल पाठक वास्तव में समझ गए होंगे कि ऐसा क्यों था, लेकिन हमें इसके बारे में थोड़ा सोचने की जरूरत है। इस बिंदु पर यह क्यों महत्वपूर्ण है कि अहीमेलेक का पुत्र एब्यातार, याजक, एपोद को अपने साथ लाया था? खैर, यहां अभी भी कुछ प्रश्न शेष हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि श्लोक 6 हमें बता रहा है कि डेविड ने प्रभु से कैसे पूछताछ की।

इसलिए, यह विशेष रूप से तथाकथित उरीम और तुम्मीम का उल्लेख नहीं करता है, जो निर्गमन 25 में वर्णित हैं, जो कि भगवान ने कुछ स्थितियों में भगवान से पूछताछ करने के लिए महायाजक को दिए गए उपकरण हैं। और सवाल यह है कि उरीम और तुम्मीम, एपोद के बीच क्या संबंध है? हमें इस मामले में उलझने की जरूरत नहीं है, ऐसे कुछ पाठ हैं जो संकेत देते प्रतीत होते हैं कि एपोद स्वयं सनी के एपोद से अलग है, यह कोई ऐसा स्थान हो सकता है जहां उरीम और तुम्मीम रखे गए हैं। लेकिन किसी भी मामले में, हम जानते हैं कि ऐसे उपकरण थे जिनका उपयोग महायाजक द्वारा भगवान से पूछताछ करने के लिए किया जाता था, और यह शायद कुछ इस तरह था, और हम यहां थोड़ा अनुमान लगा रहे हैं, लेकिन वे शायद पासे थे- वस्तुओं की तरह, क्योंकि उन्हें फेंक दिया गया था या फेंक दिया गया था, और चूंकि यह सकारात्मक आ सकता है, और महायाजक सवाल उठाएगा, क्या डेविड और उसके लोगों को किला तक जाना चाहिए और पलिशियों पर हमला करना चाहिए, तो आप इन अलौकिक उपकरणों को फेंक देते हैं, और वे या तो सकारात्मक, नकारात्मक और यहाँ दिलचस्प बात यह है कि यह अटकल होने से रोकता है, यह खाली आ सकता है।

ईश्वर किसी पूछताछ का उत्तर न देने का विकल्प चुन सकता है, हम देखते हैं कि शाऊल के जीवन के अंत में, जब वह लगातार ईश्वर से एक संदेश खोजने की कोशिश कर रहा है, और वे भेजते रहते हैं, उसके पास उरीम और तुम्मीम होते रहते हैं, और वह आता रहता है खाली, और यह भगवान की स्वतंत्रता को संरक्षित करता है, और यही कारण है कि भविष्यवाणी, जिस तरह से बेबीलोनियों और अशूरियों और अन्य लोगों ने भविष्यवाणी की थी, इज़राइल के लिए निषिद्ध थी, क्योंकि भविष्यवाणी के उन रूपों के साथ, देवताओं को वास्तव में जवाब देने के लिए मजबूर किया जा रहा है, लेकिन उरीम और तुम्मीम परमेश्वर की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखते हैं। तो, किसी भी मामले में, यह थोड़ा अलग है, लेकिन मैं इस अनुच्छेद को पढ़ रहा हूँ क्योंकि यह एक और तरीका इंगित करता है जिसके द्वारा डेविड और अन्य इज़राइली युद्ध नेता युद्ध के बारे में भगवान की इच्छा का पता लगाएंगे। ठीक है, अब, यह मानते हुए कि ईश्वर चाहता है कि इस्राएल युद्ध में जाए, अगला कदम आध्यात्मिक तैयारी है।

अब यह दिलचस्प है, और वास्तव में जिस प्रकार के युद्ध के बारे में हम बात कर रहे हैं उसकी धार्मिक प्रकृति का पता चलता है, क्योंकि सिद्धांत यह है, यदि ईश्वर चाहता है कि इज़राइल युद्ध में जाए, तो सेना को युद्ध में जाने के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है क्योंकि उन्हें तम्बू, मंदिर, पवित्रस्थान में जाने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होगी। क्यों? चूंकि ईश्वर लोगों के साथ युद्ध के मैदान में, कई समय अवधियों में, और कई लड़ाइयों में मौजूद है, यह वास्तव में सेना के साथ वाचा के सन्दूक की उपस्थिति द्वारा दर्शाया गया है। पुजारी सन्दूक लाएंगे, जो भगवान की उपस्थिति का एक गतिशील प्रतीक है, वे सन्दूक को युद्ध के मैदान में लाएंगे, यह दर्शाता है कि भगवान उनके साथ मौजूद थे।

और जैसा कि हमने यहोशू 5 में देखा, जब ईश्वर मौजूद है, तो इज़राइल को आध्यात्मिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है। और हम पुराने नियम के इतिहास में ऐसे कई स्थान देख सकते हैं जहाँ ऐसा होता है। याद करें जब वादा किए गए देश में प्रवेश करने के बाद, और जेरिको की लड़ाई से पहले, जिन लोगों का खतना नहीं हुआ था, वे जंगल में भटक रहे थे, एक जगह के पास उनका सामूहिक खतना किया गया था जिसे बाद में उन्होंने गिलगाल कहा।

अब यदि आप वापस जाएं और उत्पत्ति 34 पढ़ें, जो इस बारे में है कि कैसे याकूब, लेवी और शिमोन के पुत्रों ने अनिवार्य रूप से खतने के लिए धोखा देने के बाद पूरे शहर का नरसंहार किया, और खतने की प्रक्रिया के बारे में सोचते हुए, आप देख सकते हैं कि खतना हो रहा है, आपकी सेना का खतना करवाना वास्तविक मानव युद्ध-समझदार तकनीक नहीं होगी, लेकिन वे जानते थे कि युद्ध में जाने के लिए उन्हें आध्यात्मिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है। इसलिए, उनका खतना किया जाता है, और वे युद्ध से पहले फसह भी मनाते हैं। एक और जगह जिसके बारे में आपने नहीं सोचा होगा, और यह थोड़ा अधिक सूक्ष्म है, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है, इसमें पाया जाता है, आइए देखें 2 सैमुअल 11, मुझे विश्वास है कि यह है।

हाँ, तो 2 शमूएल 11 वसंत ऋतु में उस समय शुरू होता है जब राजा युद्ध के लिए जाते हैं। दाऊद ने योआब को राजा के सेवकों और इस्राएल की सारी सेना समेत बाहर भेज दिया। मेरा मतलब है, क्या आप यहां अंतर्निहित आलोचना सुन सकते हैं? वसंत ऋतु में जब राजा युद्ध करने जाते हैं, तब दाऊद योआब को भेजता है, दाऊद यरूशलेम में रुक जाता है, और जब वह यरूशलेम में वापस आता है, तो वह बतशेबा को देखता है, और वह उसके साथ सोता है, और वह गर्भवती हो जाती है।

और डेविड इस समस्या से कैसे निपटता है? खैर, वह उसके पति को अग्रिम पंक्ति से वापस बुलाता है, और लड़ाई के बारे में रिपोर्ट प्राप्त करने के बहाने। और वह दे देता है, डेविड उसे बर्खास्त कर देता है। अगली सुबह, उरिय्याह आता है, और किसी तरह डेविड को पता चलता है कि वह बतशेबा के साथ नहीं सोया है, और वह उसे बुलाता है, और वह उरिय्याह से पूछता है कि ऐसा क्यों है, क्योंकि अगर वह उसके साथ सोया होता तो यह उसका छिपाव होता और वह गर्भवती हो गई, तो उसने सोचा कि बच्चा उसका है।

परन्तु उरिय्याह इस प्रकार उत्तर देता है, वह कहता है, जब योआब और वाचा का सन्दूक याबेश-गिलाद के मैदान में हैं, तो मैं अपनी पत्नी के साथ कैसे सो सकता हूँ? अब उरिय्याह यहाँ क्या कह रहा है? बहुत से लोग इसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य से पढ़ते हैं और कहते हैं कि वह उन लोगों में से एक है, आप जानते हैं, जब लोग युद्ध के मैदान में होंगे तो वह आनंद में शामिल नहीं होगा। मेरा मानना है कि यहां कुछ और चल रहा है, खासकर अगर हमें याद है कि लैव्यिकस की किताब हमें बताती है कि अगर किसी आदमी के वीर्य का उत्सर्जन होता है, तो वह कुछ समय के लिए धार्मिक रूप से अशुद्ध होता है। इसलिए मुझे लगता है, खासकर जब से उरिय्याह पुरुषों के साथ वाचा के सन्दूक का उल्लेख करने की जहमत उठाता है, तो वह जो कह रहा है वह यह है कि, मैं अपनी पत्नी के साथ कैसे सो सकता हूँ और खुद को अस्थायी रूप से आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध कर सकता हूँ? हम किसी और समय इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं कि यह एक आदमी को अशुद्ध क्यों करता है, लेकिन सिर्फ एक संकेत के रूप में, मुझे लगता है कि इसका

संबंध इस तथ्य से है कि वीर्य एक संरक्षित जीवन देने वाला पदार्थ है, इसलिए यह यौन क्रिया को इतना बदनाम नहीं करता है इसकी जीवनदायी संभावनाओं को बढ़ावा देने के रूप में।

लेकिन कारण जो भी हो, उरिय्याह कह रहा है, मैं अपनी पत्नी के साथ नहीं सो सकता क्योंकि मुझे युद्ध के लिए तैयार रहना है, और अगर मेरा वीर्य निकल जाता है, तो मैं युद्ध के मैदान में नहीं जा सकता। अब, जब आपको इसका एहसास होता है, तो आपको यह अविश्वसनीय विरोधाभास मिलता है, ठीक है, डेविड द किंग, दैवीय रूप से अभिषिक्त राजा के बीच, जो बड़े कानूनों को तोड़ रहा है, है ना? तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए, और अंततः तुम्हें हत्या नहीं करनी चाहिए, हित्ती उरिय्याह के विपरीत, ठीक है? मैं इस तथ्य को सामने लाने के लिए अब तक इंतजार कर रहा था कि वह मूल-निवासी इज़राइली भी नहीं है। वह स्पष्ट रूप से एक ऐसा व्यक्ति है जो इस्राएलियों के पक्ष में आ गया है और उसने याहवे को अपने भगवान के रूप में पुष्टि की है, रूथ की तरह रूथ, मोआबियों की पुस्तक में, और वह कानून के विवरण के साथ बहुत सावधान रह रहा है।

मैं अपनी पत्नी के साथ सोने नहीं जा रहा हूँ क्योंकि तब मैं थोड़े समय के लिए अशुद्ध हो जाऊंगा और युद्ध में नहीं जा सकूंगा। तो, किसी भी मामले में, यह एक दिलचस्प मार्ग है जो मुझे लगता है कि यदि आप लैब्यक्स के पवित्रता कानूनों की पृष्ठभूमि को समझते हैं, तो यह वास्तव में उस अध्याय में क्या चल रहा है, इस पर प्रकाश डालता है, और इसमें जाने से पहले आध्यात्मिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता के इस विचार को भी दर्शाता है। युद्ध। अब, एक बार आध्यात्मिक रूप से तैयार होने के बाद, हमारे पास बलिदान चढ़ाने के युद्धों से पहले के कुछ रिकॉर्ड भी हैं।

युद्ध में जाने से पहले सेना अपने साथ रहने वाले पुजारियों के नेतृत्व में बलि चढ़ाती थी। और इसका चित्रण किया गया है, आमतौर पर आपको ये चित्रण तब मिलता है जब इन कहानियों में कुछ गलत होता है, लेकिन 1 शमूएल 13. शाऊल, एक नव अभिषिक्त राजा, पलिशितियों के खिलाफ युद्ध करने जा रहा है, और वह जानता है कि उसे बलिदान चढ़ाने की जरूरत है, लेकिन सैमुअल, जो एक पुजारी है, बलिदान चढ़ाने के लिए समय पर नहीं आया है।

और इसलिए, शाऊल ने फैसला किया कि वह खुद ही बलिदान चढ़ाएगा। सैमुअल आता है, वह इस बारे में सुनता है, और सैमुअल एक प्रकार का बैलिस्टिक हो जाता है, आप जानते हैं, आपने क्या किया? और शाऊल ने कहा, अच्छा, तुम समय पर न आए, और वे लोग भाग गए, और डर गए, और चले गए। मैं और क्या कर सकता था? लेकिन फिर आपको व्यवस्थाविवरण 20 याद है, है ना? जब शाऊल के सैनिक डर गए और चले गए तो न केवल शाऊल को चिंतित नहीं होना चाहिए था, बल्कि उसे सक्रिय रूप से उन्हें जाने के लिए कहना चाहिए था।

याद रखें, व्यवस्थाविवरण 20 कहता है कि आपको सैनिकों के बीच जाना चाहिए और कहना चाहिए, क्या कोई डरा हुआ है? घर जाओ। और इसलिए शाऊल प्रभु में विश्वास की बुनियादी कमी और बुनियादी भय और चिंता दिखा रहा है जो एक योद्धा के रूप में भगवान में उसके विश्वास और विश्वास की कमी को प्रकट कर रहा है। और इसलिए, जैसा कि अब हम युद्ध के दौरान बहस करते हैं, यह एक और बिंदु को दर्शाता है, वह यह है कि शाऊल को अपने सैनिकों के भागने के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए था, इन पुराने नियम की लड़ाइयों के बारे में एक

और बिंदु को दर्शाता है, और वह यह है कि सैनिकों की संख्या और उनके हथियारों की गुणवत्ता कोई मायने नहीं रखती।

सैनिकों की संख्या और उनके हथियारों की गुणवत्ता कोई मायने नहीं रखती। क्यों? क्योंकि भगवान योद्धा है। सच तो यह है कि अगर इनका कोई महत्व है तो वह यह है कि आपको भारी ताकत के साथ युद्ध में नहीं उतरना चाहिए।

गिदोन की कहानी के बारे में सोचें, जो इसे अच्छी तरह से दर्शाती है। गिदोन मिद्यानियों के खिलाफ युद्ध करने जा रहा है और जाहिर तौर पर उसे भर्ती करने में कोई परेशानी नहीं है क्योंकि वह 35,000 लोगों की सेना के साथ आता है। और भगवान क्या कहते हैं? भगवान कहते हैं, बहुत सारे आदमी हैं।

आप जानते हैं, आपको अपनी सेना को छोटा करने की आवश्यकता है। और इसलिए, सब कुछ करने के बाद, जो कोई भी डरता है, वगैरह-वगैरह, वगैरह-वगैरह, अभी भी बहुत सारे आदमी हैं। इसलिए, भगवान कहते हैं, उन्हें वादी हरोद के पास ले जाओ, और उनसे पानी पीने को कहो।

और वे करते हैं। और उनमें से कुछ ने अपने मुँह में पानी भर लिया। उनमें से कुछ अपने पेट के बल नीचे उतरते हैं और कुत्तों की तरह पानी को चाटते हैं।

और भगवान कहते हैं, उन्हें ले लो, मुझे लगता है कि वहाँ 300 कुत्ते के लैपर हैं। और आप कुछ 19वीं सदी की टिप्पणियाँ और शायद 20वीं सदी की कुछ टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, और वे जा रहे हैं, हाँ, कुत्ते लैपर्स, वे आने वाले तीरों और सामान से दूर जाना जानते हैं। नहीं, ऐसा नहीं है, इसका कोई वास्तविक कारण नहीं है कि वे कुत्तों को पकड़ने वाले बेहतर सैनिक क्यों हैं।

दरअसल, वहाँ हिब्रू थोड़ी अजीब है। हमें यकीन नहीं है कि उसने कौन सी श्रेणी ली। लेकिन नहीं, यह बस इसे 300 तक कम कर रहा है।

क्यों? क्यों यह इतना महत्वपूर्ण है? खैर, जाहिर है, यदि आप भारी ताकत के साथ युद्ध में जाते हैं और जीतते हैं, तो आप कहते हैं, हम मजबूत हैं। जबकि, यदि आप एक बड़ी सेना के खिलाफ एक छोटी सी सेना के साथ युद्ध में जाते हैं, और आप जीत जाते हैं, तो आप जानते हैं कि भगवान ही हैं जिन्होंने आपको जीत दिलाई है। आइए 1 शमूएल 17 में डेविड और गोलियथ की कहानी को इसके उदाहरण के रूप में मानें।

तो, 1 शमूएल 17 इसका एक उदाहरण है। यह व्यक्तिगत युद्ध द्वारा युद्ध का एक नमूना है। और इसलिए, यह पुराने नियम की सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक है, जहाँ शाऊल और उसकी सेना पलिशियों के खिलाफ लड़ रहे हैं, और पलिशियों के पास गोलियथ नाम का एक चैंपियन है।

अब, यह हिब्रू कहानी कहने, वर्णन करने की एक दिलचस्प विशेषता है, कि अन्य प्रकार के साहित्य के विपरीत, जिनसे हम परिचित हैं, जैसे कि 19वीं सदी के ब्रिटिश उपन्यास, इसमें लोगों का बहुत अधिक भौतिक विवरण नहीं है। और जब वहाँ है, तो यह कहानी के लिए महत्वपूर्ण है।

तो, आपने बतशेबा के सुंदर होने, या अबशालोम के लंबे बाल होने के बारे में पढ़ा, वे हमेशा कहानी में सहायक रहे हैं।

और मैं वास्तव में गोलियथ के बारे में जो वर्णन हमें मिलता है, उसके अलावा और कोई भौतिक विवरण नहीं जानता। 1 शमूएल 17 श्लोक 4 से 7 में, यह कहा गया है, गोलियथ नाम का एक योद्धा, जो गत का था, पलिशती शिविर से बाहर आया। उसकी ऊंचाई छह हाथ और एक स्पान थी।

उसके सिर पर कांसे का हेलमेट था और उसने 5,000 शेकेल वजन वाले कांस्य के स्केल कवच का कोट पहना था। उसने अपने पैरों में कांसे की ग्रीक्स पहनी हुई थी और उसकी पीठ पर कांसे का भाला लटका हुआ था। उसके भाले की छड़ जुलाहे की छड़ी के समान थी, और उसके लोहे के सिरे का वजन 600 शेकेल था।

उसका ढाल ढोनेवाला उसके आगे आगे चला गया। इसलिए, कोई भी सेना में तब तक चुनौती नहीं लेता जब तक डेविड, जो सेना में नहीं है, अपने बड़े भाइयों को दोपहर का भोजन देने के लिए नहीं आता जो सेना में लड़ रहे हैं। और दाऊद ये ताने सुनता है, और इससे वह क्रोधित हो जाता है, क्योंकि उसका मानना है कि यह परमेश्वर पर हमला है।

और इसलिए, वह स्वेच्छा से गोलियथ के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गया। और वह शाऊल का कवच पहनने के लिए बहुत छोटा है। वह प्रसिद्ध रूप से गुलेल के साथ युद्ध में उतरता है।

अब, इसकी कल्पना करें। आप जानते हैं, एक कोने में, आपको यह विशाल योद्धा, गोलियथ, हथियारों से लैस, अनुभवी मिला है। दूसरे कोने में, आपको युवा डेविड मिला है।

हाँ, उसने भेड़ों को कुछ जंगली जानवरों से बचाया है, लेकिन बिल्कुल युद्ध-प्रेमी नहीं है। लेकिन ध्यान दें कि लड़ाई से ठीक पहले वह क्या कहता है। यह श्लोक 45-47 है।

दाऊद ने पलिशती से कहा, तुम तो तलवार, भाला और भाला लेकर मेरे विरुद्ध आते हो, परन्तु मैं सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल की सेनाओं के परमेश्वर, जिस को तुम ने ललकारा है, उसके नाम से तुम्हारे विरुद्ध आता हूँ। आज के दिन यहोवा तुम्हें मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुम्हें मार डालूंगा, और तुम्हारा सिर काट डालूंगा। आज ही के दिन मैं पलिशती सेना की लोथोंको पक्षियों और बनपशुओंको खिला दूंगा, और सारा जगत जान लेगा कि इस्राएल में परमेश्वर है।

यहां एकत्रित सभी लोगों को पता चल जाएगा कि यह तलवार या भाले से नहीं है कि भगवान बचाता है, क्योंकि लड़ाई भगवान की है, और वह आप सभी को हमारे हाथों में दे देगा। ये कुछ श्लोक युद्ध के धर्मशास्त्र का एक प्रकार से प्रतीक हैं। लड़ाई प्रभु की है।

लेकिन आइए इस पर संक्षेप में दूसरे कोण से विचार करें। हम सैद्धांतिक रूप से कल्पना कर सकते हैं कि कहानी कुछ इस तरह हो सकती है, जहां भगवान डेविड से कहते हैं, डेविड, तुम गोलियथ का सामना करो, और तुम उसे यह बताओ। तुम उससे कहो कि लड़ाई प्रभु की है।

और फिर, डेविड, मैं चाहता हूँ कि आप लगभग सौ गज पीछे चलें, क्योंकि मैं उस आदमी को बिजली के बोल्ट से भूनने जा रहा हूँ। सही? तो, यहां दिलचस्प बात यह है कि क्या आपके पास दैवीय संप्रभुता के साथ-साथ मानवीय जिम्मेदारी का भी आकर्षक अंतर्संबंध है। हाँ, डेविड, तुम्हें उसका सामना करना होगा।

तुम्हें गोफन से पत्थर फेंकना होगा, जो वह करता है और उसे गिरा देता है, और उसका सिर काट देता है। लेकिन हम इसे कई अलग-अलग कहानियों में देखेंगे, जहां कभी-कभी भगवान सेना के वहां पहुंचने से पहले ही काम खत्म कर देंगे। दरअसल, हम ऐसी ही एक कहानी के बारे में संक्षेप में बात करने वाले हैं।

लेकिन हमेशा, इंसानों को इसमें शामिल होना पड़ता है। और यह मुझे ज्ञान साहित्य के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, जो पुराने नियम का एक और क्षेत्र है जो मुझे पसंद है। यदि आप नीतिवचन की पुस्तक पढ़ेंगे, तो पिता पुत्र से कह रहा है, बुद्धि प्राप्त करो।

मूलतः, कठिन अध्ययन करें। इसके बारे में सोचो। जीवन पर चिंतन करें।

और तब वे कहेंगे, क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देता है। तो, बुद्धि दोनों है, प्रयास की आवश्यकता होती है, विचार की आवश्यकता होती है, अवलोकन की आवश्यकता होती है, और अनुभव की आवश्यकता होती है। लेकिन आखिरकार, भगवान बुद्धि देते हैं।

और मैं यह भी सोचता हूँ, बहुत अधिक गंभीर विषय पर, फिलिप्पियों 2, मैं डरता और कांपते हुए अपने उद्धार का कार्य करता हूँ, क्योंकि यह भगवान ही है जो आपको बचाता है, है ना? मानवीय जिम्मेदारी, दैवीय संप्रभुता। तो, किसी भी मामले में, अब मैं संक्षेप में जिस बारे में बात करना चाहता हूँ वह यह है कि, जो पुराने नियम में युद्ध की धार्मिक प्रकृति को भी दर्शाता है, वह युद्ध में मार्च के बारे में कुछ कहानियों पर एक नज़र डालना है। लड़ाई में एक मार्च।

और मुझे लगता है कि मैं 2 इतिहास 20 के उदाहरण से शुरुआत करूंगा, जिसका मैं सिर्फ इस विशेष युद्ध की ओर संकेत कर रहा था, भले ही मेरा दूसरा उदाहरण इजरायल के इतिहास के पहले के काल से होगा। लेकिन 2 इतिहास 20 इस बारे में बात कर रहा है कि कैसे मोआबियों और अम्मोनियों ने यहूदा पर आक्रमण किया, और यहोशापात ने उनका सामना करने के लिए सेना एकत्र की। और जब हम श्लोक 20 पर आते हैं, तो हम देखते हैं, वे सुबह-सुबह तकोआ के रेगिस्तान के लिए रवाना हो गए।

और जब मोआबियों ने प्रस्थान किया, तब यहोशापात ने खड़े होकर कहा, हे यहूदा, हे यरूशलेम के लोगो, मेरी सुनो। अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, और तुम्हारा उद्धार किया जाएगा। उसके पैगम्बरों पर विश्वास रखें, और आप सफल होंगे।

लोगों से परामर्श करने के बाद, यहोशापात ने यहोवा के लिए गाने और उसकी पवित्रता की महिमा के लिए उसकी स्तुति करने के लिए लोगों को नियुक्त किया। जब वे बाहर निकले, तो सेना के प्रधान ने यह गीत गाया, कि प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि उसका प्रेम युगानुयुग बना रहेगा।

जब वे गाने और स्तुति करने लगे, तब यहोवा ने सेईर पर्वत के पास अम्मोनियों और मोआबियों पर घात लगाकर हमला किया, जो यहूदा पर आक्रमण कर रहे थे, और वे हार गए।

अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर पर्वत के लोगों को नष्ट करने और उनका नाश करने के लिये उनके विरुद्ध चढ़ाई की। सेईर के लोगों को मारने के बाद, उन्होंने एक दूसरे को नष्ट करने में मदद की। जब यहूदा के लोग उस स्थान पर आए जहां से जंगल दिखाई देता है, और विशाल सेना की ओर देखा, तो उन्हें भूमि पर केवल लोथें पड़ी हुई दिखाई दीं।

कोई भी भाग नहीं पाया था. तो, मुद्दा यह है कि, इस स्थिति में भी, जहां यहूदियों को लड़ना नहीं था, फिर भी उन्हें युद्ध में आगे बढ़ना था, और जब उन्होंने ऐसा किया, तो वे भगवान की स्तुति कर रहे थे, क्योंकि यह पूजा का एक कार्य था जो वे कर रहे थे. अब, दूसरा उदाहरण जो मैं देना चाहता हूं, हो सकता है कि आपने इसके बारे में ठीक से सोचा न हो, लेकिन यदि आप संख्याओं की पुस्तक को ध्यान से पढ़ेंगे, तो आप देख सकते हैं कि संख्याओं की पुस्तक जंगल में भटकने का चित्रण कर रही है, न कि किसी तरह की भटकती हुई यात्रा का। घटना के आसपास, बल्कि युद्ध में मार्च के रूप में।

वे युद्ध में आगे बढ़ रहे हैं। अब, मैं ऐसा कैसे कह सकता हूँ? ठीक है, सबसे पहले, ध्यान दें कि संख्याओं में, संख्याओं की शुरुआत, संख्याएँ अध्याय 1, वह है जिसे आमतौर पर जनगणना के रूप में जाना जाता है, लेकिन यह वास्तव में एक सैन्य पंजीकरण है। यह चित्रांकन है, यह प्रत्येक जनजाति के लिए गिनती कर रहा है, 20 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पुरुष, जो सेना में सेवा करने में सक्षम हैं।

तो, मूल रूप से, यह जो कर रहा है, वह एक प्रकार का सैन्य पंजीकरण दे रहा है, यह भगवान के लोगों को एक सेना के रूप में चित्रित कर रहा है। अब, संख्या 2 और उसके बाद, शिविर की व्यवस्था की एक तस्वीर है, जब वे बसते हैं और अपने तंबू लगाते हैं, तो इसकी एक अलग व्यवस्था होती है। और मध्य में तम्बू है, ठीक है? तब लेवियों ने तम्बू के चारों ओर डेरा डाला , और फिर विभिन्न गोत्रों ने तम्बू के उत्तर-पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में अपना स्थान बना लिया।

अब, विद्वानों ने इसे देखा है और इसकी तुलना युद्ध शिविरों, प्राचीन निकट पूर्वी युद्ध शिविरों से की है, जहां बीच में सेनापति का तम्बू होता है, और तम्बू पृथ्वी पर भगवान का घर है। यह उसका तम्बू है, यह बहुत विस्तृत तम्बू है, लेकिन वह राजा है। तो, तम्बू मध्य में है, और फिर राजा के अंगरक्षक तम्बू को घेरे रहते हैं।

हमारे पास इसे पूर्ण रूप से विकसित करने का समय नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि पुजारियों के बारे में सोचने का सबसे अच्छा तरीका भगवान की पवित्रता के अंगरक्षक के रूप में है। वैसे, उन्हें अपना काम सोने के बछड़े के अवसर पर मिलता है, जब वे बाहर जाकर लेवियों को मारने, मूसा की आज्ञा मानने और बाहर जाकर बछड़े के उपासकों को मारने के इच्छुक होते हैं। और मूसा कहते हैं, आज के दिन तुम अलग किए गए।

और मैं और भी उदाहरण दे सकता हूँ, लेकिन किसी भी मामले में, उन लेवियों के बारे में सोचें जो परमेश्वर के अंगरक्षकों के रूप में पवित्र स्थान की रक्षा करते हैं, और फिर बाकी सेना इसे घेर लेती है। लेकिन स्वयं मार्च में एक सादृश्य भी है, क्योंकि जब एक प्राचीन निकट पूर्वी सेना मार्च करती थी, तो सेनापति, राजा अक्सर सेना का नेतृत्व करता था, और उसके बाद बाकी सैनिक उसका अनुसरण करते थे। और ध्यान दें, मार्च की शुरुआत में, संख्या अध्याय 10 में, मूसा क्या कहता है, यह श्लोक 35 में कहता है, संख्या 10:35, जब भी सन्दूक रवाना हुआ, मूसा ने कहा, उठो, भगवान, तुम्हारे दुश्मन तितर-बितर हो जाएं, तेरे शत्रु तेरे साम्हने से भाग जाएं।

तो, उठो, हे प्रभु, और आप इसे भजनों में देखते हैं, मैं बस एक क्षण में भजनों के बारे में थोड़ी टिप्पणी करूंगा, युद्ध से इसका संबंध। लेकिन जब भी आप उठते हुए सुनते हैं, तो यह दिव्य योद्धा के उठने का विचार होता है, और इस मामले में, इज़राइल के अनगिनत दुश्मनों को तितर-बितर कर देता है। तो, जंगल में मार्च को संख्याओं की पुस्तक में युद्ध में मार्च के रूप में चित्रित किया गया है।

ठीक है, तो, अंततः, एक लड़ाई के बाद, ठीक है, सबसे पहले, अगर यह एक ऐसी लड़ाई है जिसके लिए भगवान ने इज़राइल को आदेश दिया है, और वे इसे ईमानदारी से निभाते हैं, तो वे जीतते हैं। और इसलिए, दिन का पहला क्रम उत्सव है। दिन का पहला क्रम उत्सव है, और हमारे पास उत्सव भजनों के कई उदाहरण हैं।

सबसे पहले, निर्गमन अध्याय 15 जैसी जगह में, फिरौन के रथ सैनिकों को हराने के बाद, जिसे हम योम सूफ़, लाल सागर, मूसा और इस्राएलियों की लड़ाई कह सकते हैं, जैसा कि निर्गमन 15 में कहा गया है, गीत गाया प्रभु को। मैं यहोवा का भजन गाऊंगा, क्योंकि वह अत्यंत महान है, उसने घोड़े और सारथी दोनों को समुद्र में फेंक दिया है। प्रभु मेरी शक्ति और मेरी सुरक्षा है, वह मेरा उद्धार बन गया है, वह मेरा भगवान है और मैं उसकी स्तुति करूंगा।

मेरे पिता का परमेश्वर, और मैं उसकी बड़ाई करूंगा। प्रभु एक योद्धा है, प्रभु उसका नाम है। ठीक है, मैं यहां रुककर यह कहना चाहता हूँ कि यह पहली बार है जब यहोवा को स्पष्ट रूप से योद्धा कहा गया है।

हिब्रू भाषा ईश मिल्हामा है, जिसका अर्थ है युद्ध करने वाला व्यक्ति। यह पहली बार नहीं है, जैसा कि हम अपने अगले भाग में देखेंगे, कि भगवान एक योद्धा की तरह कार्य करता है, लेकिन यह पहली बार है कि उसे योद्धा कहा गया है। फिरौन के रथों और उसकी सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया, फिरौन के अच्छे से अच्छे हाकिम लाल समुद्र में डूब गए, और गहरे पानी में डूब गए, और वे पत्थर की नाईं गहिरा स्थानों में डूब गए।

आपका दाहिना हाथ, भगवान, शक्ति में राजसी था, आपका दाहिना हाथ, भगवान, दुश्मन को चकनाचूर कर दिया। और इस महान जीत का जश्न मनाया जाता है। हम इसे नहीं पढ़ेंगे, लेकिन आपके समय में आपको न्यायाधीश 5 पढ़ना चाहिए, जो डेबोरा और बराक के नेतृत्व में मिद्यानियों पर जीत का जश्न मनाने वाला एक भजन है और ऐतिहासिक पुस्तकों में अन्य भी हैं।

लेकिन इससे मुझे इस बारे में संक्षेप में बात करने का अवसर भी मिलता है कि पुराने नियम की समयावधि के दौरान भजन किस प्रकार युद्ध के साथ जुड़े हुए थे। तो यह उस अध्ययन पर वापस जाता है जो मैंने अपने करियर की शुरुआत में इस प्रश्न को देखते हुए किया था और उस अध्ययन में, मुझे यह स्पष्ट हो गया कि 150 भजनों में से 49 ने प्राचीन इज़राइल के युद्धों में अपनी स्थापना पाई। अब ईसाई पाठकों के रूप में यह बात कभी-कभी हमसे छूट जाती है, इसका कारण यह है कि हम भाषा को शीघ्रता से आध्यात्मिक बना लेते हैं, जिसके बारे में मैं बाद में बात करूंगा कि जब हम नए नियम के आध्यात्मिक युद्ध में आगे बढ़ेंगे तो यह एक उपयुक्त बात होगी।

लेकिन पुराने नियम में, युद्ध की भाषा अपने दुश्मनों के खिलाफ इज़राइल के युद्धों से जुड़ी रही होगी। और जब आप उन्हें देखते हैं तो आप देख सकते हैं कि ऐसे भजन हैं जो युद्ध से पहले, युद्ध के दौरान और बाद में गाए गए थे। मैं प्रत्येक का एक उदाहरण देने जा रहा हूँ।

युद्ध से पहले गाए गए एक भजन के लिए, आइए भजन 7 की ओर मुड़ें। और मुझे लगता है कि जैसे ही मैंने इसे पढ़ा, एक बार हमें यह एहसास हो गया कि इसका संबंध पुराने नियम के दौरान शारीरिक लड़ाइयों से है, तो इसमें ज्यादा स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होगी। पुराने नियम की समय अवधि के दौरान, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है, हे भगवान, मेरे भगवान, मैं आपकी शरण लेता हूँ, मुझे उन सभी से बचाएं और बचाएं जो मेरा पीछा करते हैं या वे मुझे शेर की तरह फाड़ देंगे और मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और कोई नहीं होगा। मुझे बचाओ। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैं ने ऐसा किया हो, और मैं दोषी ठहरूँ, यदि मैं ने अपने मित्र का बदला बुराई से दिया हो, वा अकारण अपने शत्रु को लूटा हो, तो मेरा शत्रु मेरा पीछा करके मुझे पकड़ ले।

वह मेरे प्राणों को रौंद डाले, और मुझे धूल में सुला दे। उठो, याद रखो हमने उदय या उठो की बात की थी। हे प्रभु, अपने क्रोध में मेरे शत्रुओं के क्रोध के विरुद्ध उठो।

मेरे भगवान जागो, न्याय करो। जब तू उनके ऊपर ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हो, तब इकट्ठे हुए लोगोंको तेरे चारों ओर इकट्ठा होने दे। संसार देश देश के लोगों का न्याय करे, हे परमप्रधान, हे प्रभु, मेरी धार्मिकता के अनुसार, मेरी सत्यनिष्ठा के अनुसार मेरा न्याय कर।

दुष्टों की हिंसा का अंत करो और धर्मियों को सुरक्षित करो। आप धर्मी परमेश्वर हैं जो मन और हृदय की जांच करते हैं। मेरी ढाल परमप्रधान परमेश्वर है, जो सीधे मन वालों का उद्धार करता है।

परमेश्वर एक धर्मी न्यायाधीश है, एक ऐसा परमेश्वर जो हर दिन अपना क्रोध प्रदर्शित करता है। यदि वह नहीं झुकेगा तो वह अपनी तलवार पर धार लगाएगा, वह झुकेगा और अपने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा। वह अपने घातक हथियार तैयार करता है, वह अपने ज्वलंत तीर तैयार करता है।

जो कोई बुराई से गर्भवती है, वह संकट को जन्म देता है और मोहभंग को जन्म देता है। जो कोई गड्ढा खोदकर उसे निकालता है, वह अपने बनाए हुए गड्ढे में गिरता है। उनके द्वारा फैलाई गई मुसीबत का असर उन पर पड़ता है, और उनकी हिंसा उनके ही सिर पर आती है।

मैं यहोवा की धार्मिकता के कारण उसका धन्यवाद करूंगा। मैं परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा। इसलिए, भजन 7 और इसी तरह के भजन युद्ध से पहले गाए जाते थे और भगवान से अपने दुश्मनों के खिलाफ उठने और लड़ने का आह्वान किया जाता था।

भजन 91 युद्ध के दौरान गाए गए भजन का एक अच्छा उदाहरण है। इसलिए, यदि आप भजन 7 को वर्गीकृत करते हैं तो यह एक विलाप है लेकिन भजन 91 को विश्वास के भजन के रूप में सबसे अच्छा वर्णित किया गया है। फिर से, मुझे लगता है कि युद्ध के दौरान ईश्वर में आस्था और विश्वास व्यक्त करते हुए गाया गया गीत।

जो कोई परमप्रधान की शरण में रहता है वह सर्वशक्तिमान की छाया में विश्राम करेगा। मैं यहोवा के विषय में कहूंगा, वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है, वह मेरा परमेश्वर है, और जिस पर मैं भरोसा करता हूँ। निश्चय वह तुम्हें बहेलिये के जाल से और घातक महामारी से बचाएगा।

वह तुम्हें अपने पंखों से ढक लेगा और तुम उसके पंखों के नीचे शरण पाओगे। उसकी वफ़ादारी तुम्हारी ढाल और प्राचीर बनेगी। तू न तो रात के भय से डरेगा, न उस तीर से जो दिन में उड़ता है, न उस मरी से जो अन्धियारे में फैलती है, न उस महामारी से जो दोपहर को नाश करती है।

एक हजार आपकी तरफ गिर सकते हैं, 10,000 आपकी दाहिनी ओर, लेकिन वह आपके पास नहीं आएंगे। तू केवल अपनी आंखों से देखेगा, और दुष्टों का दण्ड देखेगा। यदि तू कहे कि यहोवा मेरा शरणस्थान है, और तू परमप्रधान को अपना निवासस्थान बनाए, तो कोई हानि तुझ पर न पड़ेगी, और कोई विपत्ति तेरे तम्बू के निकट न आएगी।

क्योंकि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे सब प्रकार से तेरी रक्षा करें। वे तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्थर से ठेस लगे। तू सिंह और नाग पर पांव रखेगा।

तुम बड़े सिंह और साँप को रौंद डालोगे। प्रभु कहता है, क्योंकि वह मुझ से प्रेम रखता है, मैं उसे बचाऊंगा। मैं उसकी रक्षा करूंगा क्योंकि वह मेरा नाम स्वीकार करता है।

वह मुझे बुलाएगा और मैं उसे उत्तर दूंगा। मैं मुसीबत में उसके साथ रहूंगा। मैं उसे छुड़ाऊंगा और उसका सम्मान करूंगा।

मैं उसे दीर्घायु से तृप्त करूंगा और अपना उद्धार दिखाऊंगा। ठीक है तो अंततः भजन 2 में ऐसे कई भजन हैं जो जीत का जश्न मनाते हैं। अब एक ओर निर्गमन 15 और न्यायाधीश 5 और दूसरी ओर इन भजनों के बीच अंतर यह तथ्य है कि निर्गमन 15 और न्यायाधीश 5 वे हैं जिन्हें मैं ऐतिहासिक रूप से अंतर्निहित कह सकता हूँ।

वे एक विशिष्ट जीत का जश्न मना रहे हैं। भजन ऐतिहासिक रूप से गैर-विशिष्ट माने जाते हैं क्योंकि भजनकार अपनी कविताएँ लिखते हैं ताकि उनके बाद आने वाले अन्य लोग इसे अपनी स्थिति और संदर्भ में लागू कर सकें। यह भजन 51 के बारे में सच है जिसे हम सुनते हैं कि डेविड ने

बथशेबा के साथ पाप के संबंध में पैगंबर नाथन द्वारा सामना किए जाने के बाद लिखा था जिसे हमने पहले देखा था।

लेकिन यह व्यभिचार के बारे में बात नहीं करता है, बस डेविड ईश्वर से अपने पापों को माफ करने के लिए प्रार्थना कर रहा है और फिर हममें से अन्य लोग जो पाप करते हैं, लेकिन शायद डेविड की तरह नहीं, वे उस भजन को अपनी प्रार्थना के लिए एक टेम्पलेट के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इसलिए, जिन दो भजनों पर हम यहां एक त्वरित नज़र डालने जा रहे हैं, वे ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट नहीं हैं और इन्हें अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल किया जा सकता है। भजन 24 पढ़ते समय मैं आपको युद्ध में जहाज़ की भूमिका की याद दिलाता हूँ।

भजन 24 शुरू होता है, पृथ्वी और जो कुछ इस में है, यह संसार और जो कुछ इस में रहता है उन सब का है, क्योंकि उसी ने इसे समुद्रों पर स्थापित किया, और जल पर स्थापित किया, जो प्रभु के पर्वत पर चढ़ सके, जो अपने पवित्र स्थान में खड़ा हो सके। जिनके हाथ साफ हैं और उनका हृदय शुद्ध है, जो किसी मूर्ति पर भरोसा नहीं करते या झूठे भगवान की कसम नहीं खाते, वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर से पुष्टि के लिए भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे, जैसे कि उन लोगों की पीढ़ी जो उसे ढूंढते हैं, जो आपके विश्वास की तलाश करते हैं, याकूब के भगवान।

और फिर भजन के शेष भाग में हेंडेल के मसीहा द्वारा प्रसिद्ध इस दिलचस्प अनुष्ठान को आगे-पीछे किया गया है, लेकिन इसे देखना थोड़ा मुश्किल है जब तक कि आप प्राचीन पृष्ठभूमि का अध्ययन नहीं करते कि वास्तव में यहां क्या हो रहा है, लेकिन जैसा कि मैं कहता हूँ कि यहां एक प्रकार का अनुष्ठान आगे-पीछे होता है वहाँ दो आवाज़ें हैं जो एक दूसरे से बात कर रही हैं। मैं तर्क दूंगा कि वे पुरोहितों की आवाज़ें हैं और स्थिति यह है कि वे वाचा के सन्दूक के साथ युद्ध से लौट रहे हैं जिसे वे वापस मंदिर में रखने वाले हैं।

तो, जिस आवाज से मैं बहस करूंगा वह सेना से है और सन्दूक कहता है, अपने सिर उठाओ, हे द्वारों, तुम प्राचीन द्वारों को ऊपर उठाओ, जिससे महिमा का राजा प्रवेश कर सके। इसलिए, अपने सिर उठाओ, हम सब कुछ नहीं जानते हैं तकनीकी बातें, लेकिन इसका सीधा सा अर्थ है उन द्वारों को खोलना जिनमें महिमा का राजा प्रवेश कर सके।

फिर दूसरी पुजारी की आवाज जो शहर या मंदिर की दीवार पर हो सकती है, कहती है कि यह महिमामय राजा कौन है और प्रतिक्रिया है भगवान मजबूत और शक्तिशाली भगवान युद्ध में शक्तिशाली हैं। युद्ध में वह पराक्रम इस बात का संकेत है कि यह परिदृश्य युद्ध से लौट रहा है। अपने सिर उठाओ, हे द्वार, उन्हें ऊपर उठाओ, हे प्राचीन द्वार, जिससे महिमा का राजा प्रवेश कर सके। महिमा का यह राजा कौन है, प्रभु ने यहां सर्वशक्तिमान भगवान का अनुवाद किया है, लेकिन शायद स्वर्ग की सेनाओं के भगवान का बेहतर अनुवाद किया गया है। वह महिमा का राजा है।

ठीक है, तो, दूसरा उदाहरण और मेरे पसंदीदा भजनों में से एक भजन 98 है। प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ क्योंकि उसने अद्भुत काम किए हैं। उसके दाहिने हाथ और उसकी पवित्र भुजा ने उसके लिए उद्धार का काम किया है। प्रभु ने उद्धार को प्रगट किया है और राष्ट्रों पर अपनी

धार्मिकता प्रकट की है। उन्होंने इसराइल के प्रति अपने प्यार और अपनी वफादारी को याद किया है। पृथ्वी के सभी छोरों ने हमारे परमेश्वर का उद्धार देखा है।

फिर, हमें थोड़ा सावधान रहना होगा कि हम तुरंत ईसाई धर्मशास्त्र को उस पाठ में न पढ़ें जहाँ हम मुक्ति के बारे में सुनते हैं और हम रूपांतरण के बारे में सोचते हैं। अब इसे विजय के रूप में बेहतर अनुवादित किया जा सकता है। यह जो जश्न मना रहा है वह एक जीत है और हम इसे उसके दाहिने हाथ की भाषा और उसकी पवित्र भुजा के लिए देख सकते हैं जो निर्गमन में और यशायाह में भगवान की युद्ध गतिविधि से जुड़ी है।

यह दिलचस्प है और मैंने वर्षों पहले इस पर एक अध्ययन किया था, यदि आप देखें कि भजन, यशायाह और यहां तक कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक में इस वाक्यांश के नए गीत का दर्जनों बार उपयोग किया गया है, तो यह हमेशा भगवान की युद्ध गतिविधि से जुड़ा हुआ है।

तो, ऐसा नहीं है कि यह कोई नया गाना है जो पहले कभी नहीं गाया गया। मेरा मानना है कि यह एक विजय गीत की तरह है जो इस बात का जश्न मनाता है कि कैसे ईश्वर अपनी लड़ाई से सभी चीजों को फिर से नया बना देता है। तो, यह पहला छंद अतीत में जीत हासिल करने के लिए भगवान की स्तुति कर रहा है। यह इज़राइल है जो भगवान की स्तुति कर रहा है। हे इस्राएल, परमेश्वर की स्तुति करो, उसने अभी-अभी तुम्हारे लिए विजय प्राप्त की है।

तब सारी पृथ्वी पर यहोवा के लिये जयजयकार करो, वीणा बजाकर, नरसिंगे बजाकर, नरसिंगे बजाकर, और मेढ़े के नरसिंगे के शब्द के साथ यहोवा के लिये जयजयकार करो, राजा यहोवा के साम्हने जयजयकार करो।

तो, दूसरे श्लोक में ध्यान दें कि कैसे स्तुति का चक्र न केवल इज़राइल बल्कि पृथ्वी के सभी निवासियों तक जाता है, बल्कि पृथ्वी के सभी निवासियों को वर्तमान में हमारे राजा होने के लिए भगवान की स्तुति करनी चाहिए।

और फिर, अंत में, समुद्र को गूँजने दो और उसमें मौजूद सभी संसार और उसमें रहने वाले सभी लोगों को तालियाँ बजाने दो, नदियों को तालियाँ बजाने दो, पहाड़ों को एक साथ खुशी से गाने दो, उन्हें प्रभु के सामने गाने दो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने के लिए आता है। वह जगत का न्याय धर्म से, और देश देश के लोगों का न्याय न्याय से करेगा।

तो, तीसरे छंद में, काव्यात्मक मानवीकरण के माध्यम से प्रशंसा का दायरा पृथ्वी के सभी निवासियों से भी आगे बढ़ जाता है। अब नदियाँ और पहाड़ भी स्तुति में शामिल हो गए हैं और उन्हें भविष्य में न्यायाधीश बनने के लिए ईश्वर की स्तुति करनी है। और इसलिए, आपके पास तीन श्लोक हैं, विक्टर भगवान हमारे विक्टर भगवान हमारे राजा हैं भगवान हमारे न्यायाधीश हैं।

और भले ही पहला श्लोक ईश्वर की योद्धा गतिविधि से सबसे सीधे जुड़ा हुआ है, यह मामला है कि व्यापक प्राचीन निकट पूर्व में और साथ ही बाइबिल में ईश्वर का शासन उनकी युद्धरत गतिविधि

द्वारा स्थापित किया गया है, और ईश्वर का न्यायाधीश के रूप में आना एक युद्धरत गतिविधि है अपने आप।

मेरा मानना है कि पूरी सृष्टि जिस कारण से प्रशंसा कर रही है, वह न्यायाधीश के रूप में भगवान की भविष्य की भूमिका का जश्न मना रही है, जैसा कि मैं कहता हूँ कि सभी चीजों को सही करना है क्योंकि, जैसा कि पॉल हमें रोमियों 8:18 और उसके बाद याद दिलाता है, सारी सृष्टि हताशा में कराह रही है लेकिन इंतजार कर रही है वह समय जब भगवान आएंगे और सब कुछ फिर से ठीक कर देंगे।

ठीक है, इसलिए युद्ध के पहले और बाद में क्या होता है, इसके बारे में अपना सर्वेक्षण समाप्त करने से पहले एक आखिरी बिंदु, जो पांच चरणों के तहत बाइबिल के धर्मशास्त्रीय विषय की हमारी खोज को स्थापित कर रहा है। यह वही नियम है जैसा हमने व्यवस्थाविवरण 20 में देखा था। भगवान बाहर के विपरीत भूमि में उन राष्ट्रों के लिए कहते हैं। आपको उन्हें पूरी तरह से नष्ट करना है और इसलिए, यह कुछ ऐसा है जिसे हम कभी-कभी घटित होते देखते हैं, इसका मतलब है कि लूट को अपने लिए नहीं लेना। लेकिन यह इसे तम्बू या मंदिर और पुजारियों को भी सौंप रहा है। लेकिन साथ ही, इसका मतलब नागरिकों को फाँसी देना है जो इन दिनों फिर से बहुत विवादास्पद है। हम वापस आएँगे और इसके नैतिक पहलुओं पर चर्चा करेंगे, लेकिन मैं अभी इसका उल्लेख करना चाहता हूँ। यदि आप यहोशू अध्याय 7 पढ़ते हैं तो हम इसे देख सकते हैं जिसमें वर्णन किया गया है कि कैसे युद्ध के बाद वे सारी लूट को पलट देते हैं लेकिन वे शहर के नागरिकों को भी मार डालते हैं।

तो यह हमारी समीक्षा है कि युद्ध के पहले और उसके बाद क्या हुआ था और इसलिए अब हम पुराने नियम के उन वृत्तांतों में से एक चरण पर अपना ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं जहां भगवान इज़राइल के भौतिक रक्त और मांस के दुश्मनों से लड़ते हैं।

यह डॉ. टेम्पर लॉन्गमैन हैं और ईश्वर एक योद्धा है विषय पर उनकी शिक्षा, सत्र 2, युद्ध से पहले, युद्ध के दौरान और बाद में युद्ध कैसे किया जाता है।